## व्यंग्य

# चक्करवर्ती सम्राट अंतरजाल पर फैला रहे हैं मायाजाल

**भूपेश पंत**

**च**क्करवर्ती सम्राट आज एक महत्वपूर्ण काम को अंजाम दे कर थके हारे से महल लौटे हैं। वैसे तो वो बीस-बीस घंटे बिना थके काम पर डटे रहते हैं। लेकिन आज समस्याओं के जंगल से गुजरते वक़्त हवा भी जैसे उनका विरोध करने पर आमादा थी। सम्राट ने आंधी को पहली बार महसूस किया है। लेकिन उनका ये एक काम सब विरोधियों को धूल चटा देगा ऐसा उनका विश्वास है। यही सोच उन्हें गुदगुदाते बिस्तर तक खींच लायी। भावातिरेक में सम्राट के दिलोदिमाग में वो संघर्ष फिल्मी फ्लैशबैक की तरह घूमने लगा है जो बचपन से लेकर आज तक उन्होंने किया है। सम्राट सो चुके हैं पर कहानी चल रही है.....

एक समय की बात है एक चतुर कारोबारी था। दुकान में बहुत तोल मारता था। इतनी बुरी आदत पड़ गयी थी कि अपने घर में भी तोल मारता था। एक बार उसने इसी आदत के कारण दुनिया की मोह माया छोड़ कर संन्यास ले लिया। अरे.. एक बात तो रह ही गयी, उसे एक और बुरी आदत थी। बचपन में वो घर के आसपास के कुत्तों को भगाने के लिये उन पर गरम पानी या चाय फेंका करता था। जैसे-जैसे वो लंबा होने लगा रहस्य, रोमांच और गोपनीयता से भरे कॉमिक्स, उपन्यास और संपूर्ण राजनीति शास्त्र की किताबें

पढ़ने लगा। उनसे टीप टीप कर जुमले आस पास के लोगों पर फेंका करता।

...तो संन्यास के दौरान एक बार उसने प्लेटो के दार्शनिक राजा के सिद्धांत को पढ़ा। तब किसी सहयोगी विद्वान ने बताया कि संन्यासी से बड़ा दार्शनिक कोई नहीं। लिहाज़ा अगर तू एक बार संन्यासी जीवन में थोड़ी तोल मार ले तो तुझे राजा बनने से कोई नहीं रोक सकता। कारोबारी को ये कदम राजनीति शास्त्र सम्मत लगा। उसने जिस माया को छोड़ दिया था उसी के जाल में लोगों को बांधा और एक प्रांत का अधिपति बन गया।

कारोबारी संन्यासी नेता ने लोगों को भ्रमजाल में डाला और उसके भक्तों की टोली बढ़ती गयी। धीरे धीरे उसने मायाजाल के साथ अंतरजाल का भी सहारा लिया। उसे राजा बनाने की भविष्यवाणियां इतनी हुईं कि वो खुद लोगों के लिये आकाशवाणी बन गयीं। जैसे यही लोगों के मन की बात हो। संपूर्ण राजनीति शास्त्र के सिद्धांत और प्लेटो की मुराद दोनों ही धरातल पर उतर आयी। फकीर राजा बन गया। वो अब चक्करवर्ती सम्राट है। कारोबारी संन्यासी नेता भले ही अब सम्राट बन चुका हो लेकिन उसके भीतर ये तीनों आज भी मौजूद हैं। उन्हें बड़े कारोबारियों से विशेष स्नेह है और संन्यास तो उन्होंने आज तक नहीं छोड़ा। सम्राट बने रहने के लिये अब नेतागिरी के अलावा और कोई चारा भी नहीं।

सम्राट ने राज्य के लिये क्या कुछ नहीं किया ये उन्हें ही मालूम है। सम्राट जैसा कोई नहीं, वो फकीर हैं राज्य की तकदीर हैं। ऐसे चुनावी नारे अंतरजाल में फैलाये जा रहे हैं। अंतरजाल हो, टीवी सीरियल हो, खबरें या फिर सिनेमा हर कहीं विरोधी खलनायक बन निशाने पर हैं और हीरो तो बस हर रूप में सम्राट ही हैं। कभी वो तेनाली बन जाते हैं तो कभी गोकुल धाम। रचनात्मकता के गले पर उनके नाम का पट्टा बांध दिया गया है। तोता जो भी पर्ची निकालता है बस सम्राट का नाम ही निकलता है। लेकिन सम्राट को मालूम है कि सच इस तरह छिपता नहीं है और आँकड़े झूठ नहीं बोलते। अब सम्राट की चिंता ये है कि आंकड़ों से झूठ बुलवाया कैसे जाये कि झूठ ही सच लगने लगे।

ऐसे तनाव के क्षण में जबकि चापलूस शाही विदूषक पानीपत के मोर्चे पर है, सम्राट के भीतर का कारोबारी उनकी मदद के लिये बाहर आया। उसने सम्राट को हनुमान की तरह उनकी शक्ति की याद दिलाते हुए कहा कि अपनी उस प्रतिभा का इस्तेमाल करो जिससे लोगों को भ्रमित कर सको। वो तुम्हारे चेहरे पर गरीबी की काली पर्त देखें, आंखों में आंसू देखें, हाथ में झोला देखें, राज्य भक्ति और ईमानदारी का अंत देखें और सबसे बड़ी बात कि इस बीच तुम वो हरकत कर जाओ जिससे लोग वही आंकड़े देखें जो तुम उन्हें दिखाना चाहते हो। सम्राट ने दिमाग़ पर जोर डाला कि आखिर कारोबारी का इशारा किस ओर है।

सम्राट सोच रहे हैं कि सांप्रदायिकता, जातीय घृणा, मोहरबंदी, कुसंस्कार और अपशब्दों के हथियारों से भी जो सच का सूरज छुप नहीं पा रहा उसे झूठ के बादलों में छुपाने का कोई तो तरीका होगा। जयद्रथ वध को याद करते ही सहसा उन्हें अपनी पुरानी आदत याद आयी... तोल मारना। कमबख़्त इतनी बार तोल मारी है लेकिन कर्ण की तरह युद्ध के मौके पर ही सूझ नहीं रही थी। सम्राट ने आखिरकार एक चतुर कारोबारी होने का परिचय देते हुए जनता को राज्य भक्ति की ओर भरमा कर रोजगार से लेकर राफेल तक तमाम सरकारी आंकड़ों पर तोल मार दी। ये सब करके चक्करवर्ती सम्राट अब चैन की नींद सो रहे हैं। सोते सोते अचानक खर्राटे की जगह उनके अधखुले मुंह से निकलता है... वाह सम्राट वाह!

कहानी खत्म!

# आखिर क्यों नहीं मिलता अर्धसैनिक बलों के जवानों को शहीद का दर्जा?

**रवीश कुमार**

**सी**आरपीएफ हमेशा युद्धरत रहती है। माओवाद से तो कभी आतंकवाद से। साधारण घरों से आए इसके जांबाज़ जवानों ने कभी पीछे कदम नहीं खींचा। ये बेहद शानदार बल है। इनका काम पूरा सैनिक का है। फिर भी हम अर्ध सैनिक बल कहते हैं। सरकारी श्रेणियों की अपनी व्यवस्था होती है। पर हम कभी सोचते नहीं कि अर्ध सैनिक क्या होता है। सैनिक होता है या सैनिक नहीं होता है। अर्ध सैनिक?

2010 में माओवादियों ने घात लगाकर सीआरपीएफ के 76 जवानों को मार दिया था। फिर ये अर्ध सैनिक बल पूर्ण सैनिक की तरह मोर्चों पर जाता रहा है। मन उदास है कि 40 जवानों की जानें गई हैं। परिवारों पर बिजली गिरी है। उन पर क्या गुज़र रही होगी, यह खयाल ही कंपा देता है। शोक की इस घड़ी में हम उनके बारे में सोचें।

सोशल मीडिया और गोदी मीडिया में हमले को लेकर जो हो रहा है, उसकी भाषा को समझना ज़रूरी है। उसकी ललकार में उसकी कुंठा है। जवानों और देश की चिन्ता नहीं है। वह इस वक्त ग़म में डूबे नागरिकों के गुस्से को हवा दे रहा है। इस्तेमाल कर रहा है। गोदी मीडिया हमेशा ही उन्माद की अवस्था में रहा है। जवानों की शहादत को गोदी मीडिया उन्माद के एक और मौक़े के रूप में कर रहा है।

उसकी ललकार के निशाने पर कुछ काल्पनिक लोग हैं। किसी ने कुछ कहा नहीं है फिर भी बुद्धिजीवी और कुछ पत्रकारों पर इशारा किया जा रहा है। क्या इस घटना में उनका हाथ है? ज़रा बताएं ये गोदी मीडिया कि कल के हमले में ये काल्पनिक लोग कैसे जिम्मेदार हैं, जिन्हें कभी लिबरल कहा जा रहा है तो कभी आज़ादी गैंग कहा जा रहा है। क्या इनके लिखने बोलने सेना और अर्ध सैनिक बलों को फैसला लेने में दिक्कतें आ रही थीं? और इसी कारण से घटना हुई है?

कल इस घटना की खबर आने के बाद भी मनोज तिवारी रात 9 बजे एक कार्यक्रम में डांस कर रहे थे। अमित शाह कर्नाटक में सभा कर रहे थे। इनके ट्वीट हैं। क्या ये गोदी मीडिया अमित शाह से पूछ सकता है कि क्यों कार्यक्रम रद्द नहीं किया? क्या उनसे पूछ सकता है कि कश्मीर में आपकी क्या नीति है, क्यों आतंकवाद पैर पसार रहा है?

जिनकी जिम्मेदारी है उनकी कोई जिम्मेदारी नहीं? कहीं ऐसा तो नहीं कि इन आकाओं को बचाने के लिए गोदी मीडिया काल्पनिक खलनायक खड़े कर रहे हैं। जिसे सोशल मीडिया में हवा दी जा रही है। इस दुखद मौके पर देश के लोगों के बीच हम बनाम वो का बंटवारा किया जा रहा है। राज्यपाल सत्यपाल मलिक तो कई बार कह चुके हैं कि दिल्ली के मीडिया ने कश्मीर को खलनायक बनाकर माहौल बिगाड़ा है।

शहादत के शोक के बहाने गोदी मीडिया अपना और आपका ध्यान मूल बातों से हटा रहा है। उसमें हिम्मत नहीं कि सवाल कर सके। कल प्राइम टाइम में जम्मू कश्मीर के राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने साफ-साफ कहा कि भारी चूक हुई है। काफिला गुज़र रहा था और कोई इंतज़ाम नहीं था।

क्या यह साधारण बात है? राज्यपाल मलिक ने कहा कि यही नहीं ढाई हज़ार जवानों का काफिला लेकर चलना भी ग़लत था। काफिला छोटा होना चाहिए ताकि उसके गुज़रने की रफ्तार तेज़ रहे। राज्यपाल ने यहां तक कहा कि काफिले के गुज़रने से पहले सुरक्षा बंदोबस्त की एक मानक प्रक्रिया है, उसका पालन नहीं हुआ।

**आप गोदी मीडिया की देशभक्ति को लेकर किसी भ्रम में न रहें। जब किसान दिल्ली आते हैं तो यह मीडिया सो जाता है। जानते हुए कि इन्हीं किसानों के बेटे सीमा पर शहीद होते हैं। सोशल मीडिया पर गुस्सा निकालकर राजनीतिक माहौल बनाने वाले मिडिल क्लास के बच्चे जवान नहीं होते हैं। 13 दिसंबर को अर्ध सैनिक बलों के हज़ारों पूर्व जवान अपनी मांगों को लेकर दिल्ली आए। यह मांगें उनके भविष्य को बेहतर और वर्तमान में मनोबल को बढ़ाने के लिए ज़रूरी थीं। सेवारत जवान मुझे लगातार मेसेज कर रहे थे कि हमारी बातों को उठाइये।**

हमने उठाया भी और वे यह बात अच्छी तरह से जानते हैं। तब तो किसी ने नहीं कहा कि वाह आप इनके लिए लगातार लड़ते रहते हैं, इन्हें सब कुछ मिलना चाहिए क्योंकि यह देश के लिए जान देते हैं। आप खुद इनसे पूछिए कि किसी ने भी 13 दिसंबर के प्रदर्शन की चिन्ता की थी? आप पूर्व अर्धसैनिक बलों के संगठन के नेताओं से पूछ लें यह बात कि 13 दिसंबर की रात टीवी पर क्या चला था? उस दिन नहीं चल पाया तो क्या किसी और दिन चला था?

हाल ही में अर्ध सैनिक बलों के अफसर एक लड़ाई हार गए। वे अपने बल में पसीना बहाते हैं। जान देते हैं मगर अपने बल का नेतृत्व नहीं कर सकते। यह कहां का न्याय हुआ? क्या इस चूक के लिए कोई आईपीएस जवाबदेही लेगा? क्यों इन अर्ध सैनिक बलों का नेतृत्व किसी आईपीएस को करना चाहिए? अर्ध सैनिक बलों के जवान और अफसर जान दे सकते हैं, अपना नेतृत्व नहीं कर सकते? क्या आपने इन सवालों को लेकर अर्ध सैनिक बलों के लिए किसी को लड़ते देखा है?

हम और आप तो शहीद कहते हैं लेकिन सरकार से पूछिए कि इन्हें शहीद क्यों नहीं कहती है? पूर्ण सैनिक की तरह लड़कर भी ये अर्ध सैनिक हैं और जान देकर भी ये शहीद नहीं हैं। 11 जुलाई 2018 को सरकार ने दिल्ली हाईकोर्ट में हलफनामा दिया था कि अर्धसैनिक बलों को शहीद का दर्जा नहीं दिया गया है। आप चैनल खोल कर देख लें कि कौन एंकर इनके हक की बात कर रहा है। इन्हें पेंशन तक नहीं है। शहादत के बाद पत्नी और उसका परिवार कैसे चलेगा? इस पर बात होगी कि नहीं होगी?

पूर्व अर्ध सैनिक बलों के संगठन के नेता रणवीर सिंह ने कहा है कि गुजरात में अर्ध सैनिक बलों के शहीदों के परिवार वालों को 4 लाख क्यों मिलता है? क्यों दिल्ली में एक करोड़, हरियाणा की सरकार 50 लाख देती है? रणवीर सिंह ने कहा सहायता राशि के लिए एक नोटिफिकेशन होनी चाहिए। राज्यों के भीतर मुआवज़े (एक्स ग्रेशिया) को लेकर भेदभाव क्यों होना चाहिए? कोई कम क्यों दे और कोई किसी से ज़्यादा ही क्यों दें?

रणवीर सिंह ने कहा कि सिनेमा वाले आए तो टिकट पर जीएसटी कम हो गई, संसद में तालियां बजीं और अर्ध सैनिक बल कब से मांग कर रहे हैं कि जीएसटी के कारण कैंटीन की दरें बाज़ार के बराबर हो गई हैं। उसे कम किया जाए। आज तक सरकार ने नहीं माना। अर्ध सैनिक बल इसी 3 मार्च को जंतर-मंतर फिर आ रहे हैं। उस दिन देख लीजिएगा कि गोदी मीडिया इनके हक की कितनी बात करता है।

प्राइवेट अस्तपाल में काम करने वाले एक हार्ट सर्जन ने मुझे लिखा कि हमला होना चाहिए। हम अस्सी फीसदी टैक्स देंगे। बिल्कुल उनकी इस भावना का सम्मान करता हूं मगर आए दिन उन्हीं के अस्तपाल में या किसी और अस्तपाल में मरीज़ों को लूटा जा रहा है, बेवजह स्टेंट लगा देते हैं, आईसीयू में रखते हैं, बिल बनाते हैं, उसी का विरोध कर लें। उसी को कम करवा दें और नहीं होता है तो देश की खातिर इस्तीफा दे दें। क्या दे सकते हैं?

इस हमले से पहले बजट में अगर सरकार ने वाकई 80 परसेंट टैक्स लगा दिया होता तो सबसे पहले यही डाक्टर साहब सरकार की निंदा कर रहे होते। मैं डाक्टर से नाराज़ भी नहीं हूं। ऐसी कमज़ोरी हम सभी में हैं। हम सभी इसी तरह से सोचते हैं। हमें सिखाया गया है कि ऐसे ही सोचें।

सब चाहते हैं कि सामूहिकता से जुड़ें। कुछ ऐसा हो कि सामूहिकता में बने रहें। मगर वो तर्क और तथ्य के आधार पर क्यों नहीं हो सकता। क्यों हमेशा उन्माद और गुस्से वाली सामूहिकता ही होनी चाहिए? मैं समझता हूं कि डाक्टर या ऐसी सोच वाले किसी के पास कई तरह की कुंठाएं होती हैं। कई तरह के अनैतिक समझौते से वे टूट चुके होते हैं। खुद से नज़र नहीं मिला पाते होंगे। ऐसे सभी को भी इस वक्त का इंतज़ार होता है। वे इस सामूहिकता के बहाने खुद को मुक्त करना चाहते हैं।

एक तरह से उनके अंदर की यह भावना ही मेरे लिए संभावना है। इसका मतलब है कि वे अंतरात्मा की आवाज़ सुन रहे हैं। बस उस आवाज़ को शोर में न बदलें। खुद को बदलें। उनके बदलने से देश अच्छा होगा। जवानों के माता पिता को ईमानदार डाक्टर और इंजीनियर मिलेगा। बिल्कुल सुरक्षा से कोई समझौता नहीं होना चाहिए। कोई दुस्साहस करे तो बेझिझक जवाब दिया जाना चाहिए। हम खिलौने नहीं हैं कि कोई खेल जाए। मगर मैं यही बता रहा हूं कि गोदी मीडिया आपको खिलौना समझने लगा है। आप उसे खेलने मत दो।

नोट- मैं एक जवान से बात कर रहा हूं। पुलवामा हमले में शहीद का परिवार उससे संपर्क कर रहा है। उनके बच्चे इस जवान को अपना चाचा कहते हैं। आप इस बहादुर जवान की इंसानी मुश्किलें समझिए। वह खूब रो रहा है कि अपने सीनियर के बच्चों को यह चाचा क्या जवाब दे। थोड़ा तो इंसान बनिए। कब तक आप उन्माद के बहाने भीड़ का सहारा लेते रहेंगे।

## युद्ध करा दो. बदला लो. एक के बदले 50 सिर. खून उबल रहा है. काट दो

**ज्योति**

**ये सारे बोल मध्यमवर्गीय शहरी लोग अपने लिविंग रूम में बैठे धड़ाधड़ छाप रहे हैं. इनसे पूछो कि इनसे घर से कितने सैनिक हैं, जिनके सिर कटवाने को ये आतुर हैं? इनसे ये भी पूछो कि तैयारी करके सैनिक क्यों नहीं बनते हैं? क्या शहरी लड़के सैनिक बनने के लिए सुबह चार बजे उठकर दौड़ लगा रहे हैं? शहरों से अफसर निकलते हैं. आंकड़े निकलवा कर देख लीजिए. जिस ग्रामीण परिवेश के सैनिक हर आतंकी हमले में मारे जाते हैं उन्हीं के पिताजी जब दिल्ली अपने हकों के लिए पहुँचते हैं तो ये ही मध्यमवर्गीय शहरी उन्हें भी आतंकी बोलते हैं. इन्हें लगता है कि किसान को अपने खेत में पड़े रहकर फावड़ा चलाना चाहिए यहां हमारे शहर को गंदा क्यों करने आए हैं.**

**जिस देशभक्ति का परिचय ये सोशल मीडिया पर दे रहे हैं अगर उसको जांचना है तो इनके निजी जीवन को खंगालिए. मैं छोटी सी थी तब से देख रही हूँ कि एक पड़ोस की बुआ के पति कारगिल में शहीद हुए थे. उन्हें सरकार ने पेट्रोल पम्प और मुआवजा दिया था. चार दिन की देशभक्ति के बाद ज़्यादातर लोगों को उनके लिए हमदर्दी कभी नहीं रही. ये ईर्ष्या रही कि इसके पास पेट्रोल पम्प है. उस बुआ ने दूसरी शादी की तो लोगों ने बातें बनाई. ये लोग शहीदों की पत्नियों को ताउम्र दुःख और यातनाओं में देखने के आदि हैं. ये है मध्यमवर्ग की देशभक्ति.**

**दिल्ली विश्वविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानियों के बच्चों को मिले कोटे के लिए**

**लोगों को हीन भावना से ग्रस्त होते देखा है कि उनके दादा-परदादा कर गए तो ये लोग फायदा उठा रहे हैं. मतलब सैनिकों को युद्ध में भेजकर शहीद होने की वकालत भी और उनके बच्चे नौकरी या पढ़ाई में मिले कोटे को कोसते भी रहो. ये है मध्यमवर्ग की देशभक्ति.**

**हरियाणा के जिसे इलाके से मैं हूं इस इलाके के हर घर से तीन-तीन फौजी हैं. मेरे घर में मेरे पिताजी किसान, मेरे दादा जी बीएसएफ, मेरे ताऊजी बीएसएफ, मेरे चाचा सीआरपीएफ, मेरे फूफाजी सीआरपीएफ, मेरे ताऊजी के बेटे दोनों बेटे आर्मी, बुआ का बेटा आर्मी में हैं. मेरे एक और भाई अभी आर्मी में लगने की तैयारी कर रहा है, उससे छोटा एक और भाई भी बारहवीं करते ही फौज में जाएगा.**

**जब पठानकोट बेस में हमला हुआ था तब मेरे भाईसाहब, भाभी और भतीजी उसी कैंप से महज 5 किलोमीटर दूर थे. मेरे ताऊ-ताई और दादी-दादी सबके हाल बुरे थे.**

**2010 के आस-पास मेरे फूफाजी की पोस्टिंग नक्सली एरिया में थी. उसी दौरान हुए एक नक्सली हमले में 76 जवान भी मारे गए थे. मेरी बुआ कितनी परेशान रही टीवी की खबरें देख-देख कर. लेकिन मैं कह रही हूं कि मेरे घर की औरतें अपने पतियों और बेटे को सही सलामत देखना चाहती हैं और युद्ध नहीं तो आपको दिक्कत है?**

**मैं हैरान-परेशान हूं कि ये कौन लोग हैं जो एक-एक घर के तीन-तीन फौजियों की लाशें देखने को तत्पर हैं. इनकी आईडी देखने पर तो ये आईआईएम से डिग्री लिए दिखते हैं. कोई महंगी कार के सामने खड़ा है. मलतब सब रसूखदार लोग हैं. नोट छापने वाले. लेकिन ये हमारे भाइयों को युद्ध के लिए भेजना चाहते हैं. हमारी बुआओं, चाचियों और भाभियों को विधवा और उनके बच्चों को अनाथ देखना चाहते हैं?**

**अभी दिसंबर में सीआरपीएफ के जवान कुछ मांगों को लेकर जंतर-मंतर आए थे. अगर इन तथाकथित लोगों की नज़र उनपर पड़ती तो तेज बहादुर की तरह उन्हें पागल घोषित करते. लेकिन याद आया बीएसएफ के तेज बहादुर ने जब आवाज़ उठाई कि हमें खाने में ये मिल रहा है तो वो भी देशद्रोही हो गया था.**

**सेना आवाज़ उठाए तो सेना देशद्रोही, किसानों के बच्चे आवाज़ उठाएं तो वो बच्चे भी देशद्रोही. इस देश में बस एक ही देशभक्त बचा है- वो है मध्यमवर्गीय शहरी.**

**कुछ सोचेंगे कि मैं जेएनयू से हूं. अरे नहीं ताऊ, मैं दिल्ली विश्वविद्यालय से हूं और बारहवीं तक गांव में ही पढ़ी हूं. किसान और फौजी परिवार से हूं.**